7

पतंगोत्सव का आयोजन

कपिल गहलोत*

कुछ बच्चों को विद्यालय आना बड़ा ही नीरस कार्य लगता है क्योंकि बहुत से विद्यालयों में विद्यालयी दिनचर्या में कभी कोई बदलाव नहीं होता है। यदि विद्यालय में कुछ नए विविध कार्यक्रम जैसे गीत-संगीत एवं उत्सवों का आयोजन किया जाए तो विद्यालय न केवल अपने विद्यार्थियों के लिए अपितु बाहरी बच्चों के लिए भी आकर्षण का केंद्र बन जाएगा।

दिल्ली के देहात क्षेत्र में रक्षाबंधन के पर्व को 'सिलौना' नाम से संबोधित किया जाता है। इस क्षेत्र में इस दिन मेले का आयोजन किया जाता है और खूब पतंगें उड़ायी जाती हैं। जब मैं अपने बचपन को याद करता हूँ तो सोचता हूँ कि मैं भी सिलौने से कई दिन पहले ही पतंगों और चरखियों की तैयारियाँ चालू कर देता था। अब बच्चों को देखकर मैं सोचता हूँ कि पता नहीं बच्चों का वो रंग-चाव कहाँ गया? मेरे इस भ्रम को तोड़ा कुछ बच्चों की बातचीत ने, जो इसी बारे में बात कर रहे थे कि इस बार सिलौने पर वो क्या-क्या करने वाले हैं।

मैं, दिल्ली देहात के क्षेत्र में पला-बढ़ा हूँ और यहीं पर प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत हूँ। मुझे अपने विद्यार्थियों में अपने बचपन की छवि दिखाई पड़ती है। प्रार्थना-सभा से कक्षा तक आते-जाते बच्चों और आधी छुट्टी में तफरी करते बच्चों की बातों पर ध्यान देना मुझे बहुत पसंद है और अब यह मेरी आदत हो गई है क्योंकि उनकी बातों को सुनकर एक बालमन को आसानी से पढ़ा जा सकता है। सिलौने से कुछ दिन पहले जब मैं विद्यालय परिसर में बने चबूतरे पर बैठा था तो मेरा ध्यान कुछ बच्चों की बातचीत ने अपनी तरफ आकर्षित किया। मैंने अपने कान खड़े किए तो पता लगा कि आगामी सिलौने के विषय में चर्चा हो रही थी। एक बच्चा बोला, ''मैंने तो अब पैसे बचाने चालू कर दिए हैं, ढेर सारे रुपये इकट्ठे करके निरी पतंगें लाऊँगा।'' एक लड़की बोली, ''मैं तो पतंग नहीं उड़ाती हूँ क्योंकि उस दिन

* *अध्यापक,* निगम प्रतिभा सह-शिक्षा आदर्श विद्यालय, बापडौला गाँव, नयी दिल्ली-43

राखी बाँधने में ज़्यादा मज़ा है, इससे मुझे पैसे भी मिलते हैं।'' अन्य बच्चा बोला, ''मेरे घर की छत पर मुँडेर नहीं है और गली में पतंग उड़ाएँ तो तारों में पतंग अटक जाती है।'' इस प्रकार भाँति-भाँति की बातों ने मुझे विद्यालय में 'पतंगोत्सव' के आयोजन का सुझाव दिया। मैंने प्रधानाचार्य और अन्य साथियों से इस बारे में बात की तो 'पतंगोत्सव' का बिल सदन में पास हो गया। बच्चों ने तालियाँ बजाकर, और ज़ोर-शोर से प्रस्ताव का स्वागत किया।

विद्यालय में 'पतंगोत्सव' का आयोजन एक अभूतपूर्व कार्यक्रम था। इसकी तैयारियों, समय, सामान इत्यादि की पूछताछ के लिए बच्चों की टोलियाँ, शरमाते-सकुचाते और एक-दूसरे के पीछे छुपते हुए मेरे पास आयीं और सारी बातें पूछीं। यह जानकारी देने के लिए कक्षा चतुर्थ व पंचम के बच्चों के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें उन्हें अख़बार की कतरनों से, थैलियों से सजावटी पतंगें बनाना सिखाया गया। बच्चों ने बहुत सुंदर-सुंदर पतंगें बनायीं, जिनको पतंगोत्सव के दिन विद्यालय परिसर में सजाया गया। तैयारियाँ करते-करते ''पतंगोत्सव'' का दिन आ पहुँचा।

सुबह से ही इंद्रदेव खुश थे और झमाझम बारिश आयी थी। मैं जैसे ही विद्यालय पहुँचा, बच्चों के चेहरे देखने लायक थे। चेहरों को पढ़कर ऐसा लगता था कि यदि इंद्रदेव उनकी पकड़ में आ जाए तो '' गई भैंस पानी में''। ख़ैर बच्चों से बातचीत की गयी और ''पतंगोत्सव'' को कुछ दिनों के लिए स्थगित कर दिया गया।

आखिर पतंगोत्सव मनाया गया। इंतज़ार की घड़ियाँ खत्म हुईं और पतंगोत्सव का दिन आ गया। सुबह सुहावनी थी। बारिश के आसार नहीं थे। मेरे विद्यालय पहुँचने से पहले पतंगबाजी चालू हो चुकी थी। थोड़ी देर मैंने भी पतंग उड़ायी और समझाया कि आधी-छुट्टी के बाद पतंगें उड़ाएँगे। आधी-छुट्टी तक का समय, ना तो मेरे से और ना ही बच्चों से, काटे कट रहा था। ख़ैर, 11 बजे और हम सब अपनी-अपनी पतंगों, चरखियों, टोपियों इत्यादि के साथ विद्यालय मैदान में आ डटे। एक तरफ़ मेरी टोली थी, तो दूसरी ओर अन्य अध्यापिका साथियों की। पतंगों की आपसी लड़ाई देखते ही बनती थी। विद्यालय के आकाश में चारों तरफ पतंगें ही पतंगें थी। जिनके नाम परी, चिड़ा, लाठी, चाँद, सूरज, दुरंगा, तिरंगा, पुच्छल इत्यादि चीखे-चिल्लाए जा रहे थे। जो समय सुबह बिताए नहीं बीत रहा था वो अब सरपट भागने लग गया। बच्चों ने खूब पेंच लड़ाई, खूब पतंगें लूटीं और सद्दी-माँझा नाप-नापकर उधार लिया व दिया। कुछ बच्चों ने पतंगों पर संदेश भी लिखे थे- 'आई लव मम्मी', 'मेरा देश महान', 'चोरी करना पाप है' इत्यादि। विद्यालय में ''वो काटा'', ''वो मारा'', ''पकड़'', ''भाग'' की आवाजें चारों तरफ़ गूँज रहीं थी।

पतंगबाजी करते-करते छुट्टी का समय आ पहुँचा। बच्चों को लेने आए कुछ अभिभावकों ने भी खूब आनंद उठाया। जो बच्चे छुट्टी की घंटी सुनते ही भागते थे वो आज समझा-बुझाकर घर भेजने पड़े। उत्सव को आयोजित हुए आज कई दिन बीत गए, पर उसकी चर्चा, पेड़ों पर लटके पतंगों के ढाँचे रह-रहकर उस दिन की याद दिलाते हैं।

❑❑❑